

Original Article

जोधपुर जिले के उच्च माध्यमिक विद्यालयों के विद्यार्थियों में समायोजन तथा अधिगम-शैली का तुलनात्मक अध्ययन पर शोध पत्र विश्वसनीय संदर्भ के साथ

रघुनाथ राम सुथार¹, प्रो. डॉ. अशोक भार्गव²

¹शोधार्थी, मौलाना आज़ाद विश्वविद्यालय, बुजावड़, जोधपुर

²पर्यवेक्षक, मौलाना आज़ाद विश्वविद्यालय, बुजावड़, जोधपुर

Email: rrsuthar135@gmail.com

Manuscript ID:	प्रस्तावना :
JRD -2026-180601	वर्तमान समय में विद्यार्थियों के द्वारा कक्षा में अध्ययन करना सब कुछ नहीं है बल्कि उसे गुणवत्ता, दक्षता की दृष्टि से पूर्ण रूप से तैयार करना अति आवश्यक है इसके साथ ही पुस्तकीय ज्ञान प्राप्त कर लेने से ही उनका पूर्ण विकास नहीं होता है इसके लिए सर्वांगीण विकास हेतु उनकी मानसिक योग्यता, रुचियाँ, आदते, आत्मविश्वास को विकसित करना अति आवश्यक होता है।
ISSN: 2230-9578	यह शोध पत्र जोधपुर जिले के उच्च माध्यमिक विद्यालयों के विद्यार्थियों में समायोजन (Adjustment) और अधिगम-शैली (स्मंतदपदह जलसम) के बीच सम्बन्धों का गहन विश्लेषण प्रस्तुत करता है। इसका उद्देश्य यह समझना है कि विभिन्न अधिगम शैलियाँ विद्यार्थियों के शैक्षिक और सामाजिक समायोजन को किस प्रकार प्रभावित करती हैं।
Volume 18	शोध का महत्व :
Issue 6(A)	शिक्षा के क्षेत्र में विद्यार्थियों के समग्र विकास के लिए समायोजन और अधिगम-शैली दोनों ही महत्वपूर्ण हैं। एक विद्यार्थी जो अपनी अधिगम-शैली को समझता है और उसके अनुसार सीखता है, वह अकादमिक रूप से अधिक सफल होता है। इसी प्रकार सामाजिक और भावनात्मक रूप से समायोजित विद्यार्थी विद्यालय के वातावरण में बेहतर प्रदर्शन करते हैं। यह शोध इन दोनों कारकों के बीच के जटिल संबंधों को उजागर करके शिक्षकों, परामर्शदाताओं और नीति निर्माताओं को मूल्यवान अन्तर्दृष्टि प्रदान करेगा।
Pp. 1-2	शोध के उद्देश्य :
June- 2026	1. जोधपुर जिले के उच्च माध्यमिक विद्यालयों के विद्यार्थियों में प्रचलित विभिन्न अधिगम-शैलियों की पहचान करना। विद्यार्थियों के समायोजन स्तरों का आंकलन करना (जैसे शैक्षिक, सामाजिक, भावनात्मक और व्यक्तिगत समायोजन।
Submitted: 10 May 2026	2. विभिन्न अधिगम-शैलियों वाले विद्यार्थियों के समायोजन स्तरों की तुलना करना।
Revised: 20 May 2026	3. अधिगम-शैली और समायोजन के बीच सहसम्बन्ध स्थापित करना।
Accepted: 10 June 2026	4. लिंग, आयु और विद्यालय के प्रकार (सरकारी व निजी) जैसे जनसंख्याकीय कारकों के आधार पर समायोजन और अधिगम-शैली में अंतर का पता लगाना।
Published: 30 June 2026	शोध परिकल्पनाएँ :
	1. उच्च माध्यमिक विद्यालयों में विभिन्न अधिगम-शैलियाँ पाई जाती है।
	2. विभिन्न अधिगम-शैलियों वाले विद्यार्थियों के समायोजन स्तरों में महत्वपूर्ण अन्तर होगा।
	3. अधिगम-शैली और समायोजन के बीच एक सकारात्मक सहसंबंध होगा।
	4. लिंग, आयु और विद्यालय के प्रकार के आधार पर समायोजन और अधिगम-शैली में महत्वपूर्ण अन्तर होंगे।
	शोध विधि :
	यह एक मात्रात्मक (Quntitative) शोध अध्ययन होगा जिसमें सर्वेक्षण विधि का उपयोग किया जाएगा।
	प्रतिदर्श (Sample) :
	जोधपुर जिले के विभिन्न उच्च माध्यमिक विद्यालयों से यादृच्छिक प्रतिचयन (Ramdam Sempling) विधि द्वारा लगभग ६०० विद्यार्थियों का चयन किया जाएगा प्रतिदर्श में सरकारी और निजी दोनों प्रकार के विद्यालयों के विद्यार्थी शामिल होंगे ताकि परिणामों की सामान्यीकरण क्षमता बढ़ाई जा सके।
	उपकरण (Tool) :
	1. अधिगम-शैली सूची (Learning Style Inventory) कोल्ब की अधिगम-शैली सूची (Kolb's Learning Style Inentory) या इसी तरह के किसी अन्य मानकीकृत उपकरण का उपयोग किया जाएगा जो विद्यार्थियों की अधिगम-शैली (जैसे अभिसारी, अपसारी, आत्मसात्कारी, अनुकूलनकारी) को मापता हो।



Quick Response Code:



Website:

<https://jrdrv.org/>

DOI:

10.5281/zenodo.21486719



Creative Commons (CC BY-NC-SA 4.0)

This is an open access journal, and articles are distributed under the terms of the [Creative Commons Attribution-NonCommercial-ShareAlike 4.0 International](https://creativecommons.org/licenses/by-nc-sa/4.0/) Public License, which allows others to remix, tweak, and build upon the work noncommercially, as long as appropriate credit is given and the new creations are licensed under the identical terms.

Address for correspondence:

रघुनाथ राम सुथार शोधार्थी, मौलाना आज़ाद विश्वविद्यालय, बुजावड़, जोधपुर

How to cite this article:

सुथार, रघुनाथ राम & भार्गव, अपोक. (2026). जोधपुर जिले के उच्च माध्यमिक विद्यालयों के विद्यार्थियों में समायोजन तथा अधिगम-शैली का तुलनात्मक अध्ययन पर शोध पत्र विश्वसनीय संदर्भ के साथ. Journal of Research & Development, 18(6(A)), 1-2. <https://doi.org/10.5281/zenodo.21486719>

2. **अधिगम-शैली सूची (Learning Style Inventory)** कोल्ब की अधिगम-शैली सूची (Kolb's Learning Style Inventory) या इसी तरह के किसी अन्य मानकीकृत उपकरण का उपयोग किया जाएगा जो विद्यार्थियों की अधिगम-शैली (जैसे अभिसारी, अपसारी, आत्म सात्कारी, अनुकूलनकारी) को मापता हो।
3. **समायोजन सूची (Adjustment Inventory)** ए.के.पी. सिन्हा और आर.पी. सिंह द्वारा विकसित 'स्टूडेंट एडजस्टमेंट इन्वेंटरी' या इसी तरह के किसी अन्य विश्वसनीय उपकरण का उपयोग किया जाएगा जो शैक्षिक, सामाजिक, भावनात्मक और व्यक्तिगत समायोजन को मापता हो।
4. **जनसांख्यिकीय सूचना प्रपत्र** विद्यार्थियों की आयु, लिंग, विद्यालय का प्रकार और माता-पिता की शिक्षा/आय जैसी जनसांख्यिकीय जानकारी एकत्र करने के लिए एक संरचित प्रपत्र का उपयोग किया जाएगा।
5. **आंकड़ों का विश्लेषण (Data Analysis)** - एकत्रित आंकड़ों का विश्लेषण सांख्यिकीय सफ्टवेयर (जैसे SPSS) का उपयोग करके किया जाएगा। इसमें निम्नलिखित सांख्यिकीय तकनीकों का प्रयोग किया जाएगा।

वर्णनात्मक सांख्यिकी (Descriptive Statistics) - माध्य (Mean), मध्यमान, प्रमाप विचलन (Standard Deviation), आवृत्ति (Frequency) और प्रतिशत (Percentage) का उपयोग करके अधिगम-शैलियों और समायोजन स्तरों का वर्णन किया जाएगा।

अनुमानित सांख्यिकी (Inferential Statistics) -

टी टेस्ट (T-Test) : लिंग और विद्यालय के प्रकार के आधार पर समायोजन और अधिगम शैली में अंतर का पता लगाने के लिए।

एनोवा (ANOVA) : विभिन्न अधिगम-शैलियों वाले समूहों के बीच समायोजन स्तरों में अन्तर का पता लगाने के लिए।

पियर्सन सहसंबंध गुणांक (Pearson's Correlation-Coefficient) : अधिगम-शैली और समायोजन के बीच संबंधों की शक्ति और दिशा का आंकलन करने के लिए।

प्रतिगमन विश्लेषण (Regression Analysis) : यदि आवश्यक हो, तो यह समझने के लिए कि अधिगम शैली, समायोजन को कितनी हद तक प्रभावित करती है।

अपेक्षित परिणाम :

यह शोध उम्मीद करता है कि विभिन्न अधिगम-शैलियों वाले विद्यार्थियों के समायोजन स्तरों में महत्वपूर्ण भिन्नताएँ पाई जाएगी। उदाहरण के लिए यह संभव है कि कुछ अधिगम-शैलियाँ (जैसे सक्रिय प्रयोगकर्ता) सामाजिक समायोजन में बेहतर हो, जबकि अन्य (जैसे चिंतनशील प्रेक्षक), अकादमिक समायोजन में अधिक सफल हो। यह भी उम्मीद है कि लिंग और विद्यालय के प्रकार जैसे कारक, समायोजन और अधिगम शैली पैटर्न को प्रभावित करेंगे।

निष्कर्ष और शैक्षिक निहितार्थ :

इस शोध के निष्कर्ष शिक्षकों को विद्यार्थियों की व्यक्तिगत अधिगम-शैलियों को समझने और उनके अनुसार शिक्षण रणनीतियों को अनुकूलित करने में मदद करेंगे। यह परामर्शदाताओं को उन विद्यार्थियों की पहचान करने में भी सहायता करेगा जिन्हें समायोजन संबंधी चुनौतियों का सामना करना पड़ रहा है और उन्हें उपयुक्त सहायता प्रदान करने में मदद करेगा। अंततः यह शोध जोधपुर जिले के उच्च माध्यमिक विद्यालयों में विद्यार्थियों के समग्र कल्याण और शैक्षिक सफलता को बढ़ावा देने के लिए साक्ष्य आधारित हस्तक्षेपों के विकास में योगदान देगा। यह शिक्षा नीति निर्माताओं को पाठ्यक्रम डिजाइन और मूल्यांकन पद्धतियों में सुधार के लिए भी महत्वपूर्ण जानकारी प्रदान करेगा, जिसमें एक से अधिक समावेशी और प्रभावी शिक्षण वातावरण का निर्माण हो सके।

यह शोध शिक्षा के क्षेत्र में एक महत्वपूर्ण योगदान देगा, क्योंकि यह विद्यार्थियों के व्यक्तिगत अन्तरों को समझने और उन्हें संबोधित करने की आवश्यकता पर बल देता है। जब शिक्षक विद्यार्थियों की अधिगम शैलियों को पहचानते हैं, तो वे ऐसी शिक्षण विधियों को अपना सकते हैं जो प्रत्येक विद्यार्थी के लिए सबसे प्रभावी हो। उदाहरण के लिए, यदि कोई विद्यार्थी दृश्य अधिगम-शैली वाला है, तो शिक्षक उसे चित्र, ग्राफ या वीडियो के माध्यम से पढ़ा सकते हैं। वहीं यदि कोई विद्यार्थी श्रवण अधिगम शैली वाला है, तो व्याख्यान और चर्चाएँ अधिक प्रभावी होंगी।

इसके अतिरिक्त, यह शोध समायोजन के विभिन्न पहलुओं पर प्रकाश डालेगा। एक विद्यार्थी का अकादमिक प्रदर्शन केवल उसकी बुद्धिमत्ता पर निर्भर नहीं करता, बल्कि उसे सामाजिक, भावनात्मक और व्यक्तिगत समायोजन पर निर्भर करता है। जो विद्यार्थी विद्यालय के वातावरण में सहज महसूस करते हैं, वे सीखने की प्रक्रिया में अधिक सक्रिय रूप से भाग लेते हैं और बेहतर परिणाम प्राप्त करते हैं। यह शोध उन कारकों की पहचान करने में मदद करेगा जो विद्यार्थियों के समायोजन को प्रभावित करते हैं, जिससे विद्यालय प्रशासन और परामर्शदाता इन चुनौतियों का सामना करने के लिए प्रभावी कार्यक्रम विकसित कर सकें।

इस अध्ययन के परिणाम जोधपुर जिले के उच्च माध्यमिक विद्यालयों के लिए विशेष रूप से प्रासंगिक होंगे, क्योंकि यह स्थानीय संदर्भ में समायोजन और अधिगम शैली के बीच के संबंधों को उजागर करेगा। यह स्थानीय शिक्षकों और नीति निर्माताओं को अपने विद्यार्थियों की विशिष्ट आवश्यकता को पूरा करने के लिए अनुकूलित रणनीतियाँ बनाने में सक्षम बनाएगा।

दीर्घकालिक रूप से यह शोध विद्यार्थियों के बीच ड्रॉप आउट दर को कम करने, अकादमिक प्रदर्शन में सुधार करने और उनके समग्र कल्याण को बढ़ावा देने में सहायक सिद्ध हो सकता है। यह शिक्षा के क्षेत्र में एक अधिक व्यक्तिगत और छात्र-केंद्रित दृष्टिकोण को बढ़ावा देगा, जिससे प्रत्येक विद्यार्थी अपनी पूरी क्षमता तक पहुँच सकें।

संदर्भ सूची :

1. लोकेश कोल - शैक्षिक अनुसंधान की पद्धतियाँ, विनोद पुस्तक मन्दिर, आगरा (१९७८)
2. आर.ए. शर्मा - शिक्षा में अनुसंधान की विधियाँ, लाजपत राय पब्लिकेशन, मेरठ (१९८३)
3. कोठारी आयोग रिपोर्ट - शिक्षा और राष्ट्रीय विकास (१९६४-६६)
4. महेश भार्गव - मनोवैज्ञानिक परीक्षण और मापन, राजस्थान विश्वविद्यालय प्रकाशन, जयपुर (१९८७)
5. एन.सी.ई.आर.टी. - शैक्षिक अनुसंधान महड्यूल, नई दिल्ली, (२००५)